श्री रामकथा मानस महाकाल का सप्तम दिवस

29 अप्रैल, उज्जैन । जूनापीठाधीश्वर आचार्यमहामण्डलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित प्रभु प्रेमी संघ शिविर में आहूत श्री राम कथा "मानस महाकाल" के अवसर पर व्यासपीठ से पूज्य मोरारी बापू ने कहा मेरे कोई फालोवर (follower) नहीं मेरे तो सब फ्लावर (Flower) है। युवान भाई बहन यदि सावधान रहे तब इ क्कीसवी सदी में महापुरषों से सत्पुरुषों से बहुत कुछ प्राप्त कर सकते है। अपने ईष्ट को केवल मंदिर मे सि मीत मत समझना। रुद्राष्टक शुद्धअष्टक भी है और सिद्धअष्टक भी है। शिव विश्वास है और पार्वती श्रद्धा है। विश्वास और श्रद्धा के मिलन से ही परमात्मा का प्राकट्य होता है।

शिव विष पचा गए लेकिन गुरु का अपमान महादेव पचा नहीं पाये। गुरु के साथ अद्वैत उपासना अपराध है। गुरु के प्रति ईर्ष्या और द्वेष का भाव अपराध है। गुरु में मनुष्य बुद्धि अपराध है। गुरु का दिया हुआ मन्त्र छोड़ दिया तो यह भी अपराध है। गुरु की पादुका का अपमान करना भी अपराध है। गुरु को चांदी और सोने के सिक्कों से तोलना अपराध है। उन्हें ज्ञान और वैराग्य से तोलें। भौतिक पदार्थों से संत को तोलना अपराध है। गुरु को अँधेरे में रखकर कार्य करना अपराध है। सच्चा साधू तो उदासीन प्रवृ त्ति में रहता उसे क्या फर्क पड़ता है।

अशुद्ध मन्त्र दान शिष्य का अपराध है। शिष्य को मोक्ष का प्रलोभन दिखाना भी शिष्य अपराध है। कुछ पाने के लिए शिष्य की झूठी प्रशंसा , झूठी सराहना शिष्य अपराध है।शिष्य की पात्रता देखे बिना उसके पास शास्त्र खोल देना भी शिष्य अपराध है। शिष्य से बदला लेने की भावना मन में आना भी शिष्य अपराध है। शिष्य के सामने झूठे पर्चे दिखाना चमत्कार दिखाना ये शिष्य अपराध है। तथा कथित गुरु ब्रह्म दिखाने के नाम पर शिष्य के भ्रम करे ये भी शिष्य अपराध है। जो गुरु शिष्य का धन हरे शिष्य और शिष्य परिवार का शोषण करे वो शिष्य अपराध है।

जिसका भजन रोज बढेगा उसकी वाणी में भक्ति आ जाती है। वाणी का तप है ज्यादा बोलना नहीं समय आये तब अपने को पूरा उढ़ेल देना। भक्ति भगवान की प्राप्ति का साधन है। भक्ति से क्या लाभ है ? भक्ति की भावना से ही हम इस सचाई को महसूस करते हैं कि ईश्वर ने हमे कितना कुछ दिया है। वह हमारे प्रति कितना उदार है। इससे हमें अपनी लघुता और उसकी महानता का बोध होता है , अपनी इच्छाओं और इंद्रियों पर नियंत्रण की शक्ति प्राप्त होती है और दूसरे जीवों के प्रति प्रेम का भाव पैदा होता है।

शास्त्रों में हमें अनेक प्रकार के भक्ति मार्गों का वर्णन मिलेगा। हमारे श्रीरूप गोस्वामी जी ने भक्ति के कई प्रकार बताए हैं। प्रहलाद ने श्रीमद्भागवत में भगवान को प्रसन्न करने के कई तरीके बताए हैं। ये हैं

श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन व दास्य भाव आदि। श्री चैतन्य चरितामृत में भगवान के ही मुख से कहलाया गया है कि मैं पाँच तरह से बहुत प्रसन्न होता हूँ। ये हैं साधु-संग, नाम- कीर्तन, भगवत्-श्रवण, तीर्थ वास और श्रद्धा के साथ श्रीमूर्ति सेवा। वे आगे कहते हैं कि इन पांचों में से यदि किसी मार्ग का अवलंबन श्रद्धा के साथ किया जाए तो वह हृदय में भगवत प्रेम उत्पन्न करेगा।

श्री रामकथा के शुभ अवसर शिविर प्रमुख एवं कथा यजमान विनोद अग्रवाल जी ने पोथी पूजन किया, स्वामी चिदानंद सरस्वती मुनि जी, स्वामी राजराजेश्वरानंद गिरि जी, प्रभु प्रेमी संघ शिविर की अधिशासी प्रभारी पूज्या महामण्डलेश्वर स्वामी नैसर्गिका गिरि जी, स्वामी नचिकेता गिरि जी, प्रमुख संयोजक सुशील बेरीवाला, संरक्षक पुरुषोत्तम अग्रवाल जी, समन्वयक संजय अग्रवाल जी उपस्थित रहे।

मीडिया सेल

प्रभु प्रेमी संघ कुंभ शिविर उज्जैन

उजरखेड़ा, भूखीमाता चौराहे के पास, बड़नगर रोड, उज्जैन